पूर्ण संख्या—६०

काकेशिया-दर्शन

अक्टूबर १९४४ } वर्ष ६
आश्विन २००१ } संख्या ४

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

विषय		पृष्ठ

स्थिति, सीमा, तथा विस्तार

काकेशिया की पर्वतीय श्रेणी ६५० मील लम्बी है। यह श्रेणी तामान प्रायद्वीप से बाकू के समीप तक फैली है। यह श्रेणी तीन भागों में विभाजित की जा सकती है। पश्चिमी भाग तामान से पिटसुंदा तक २३० मील लम्बा है। इस भाग में सरकासिया और अबक़ाज़िया के कठिन तट स्थित हैं। यह तट किसी किसी स्थान पर ७ हज़ार फ़ुट ऊँचे हैं। पिटसुंदा के पूर्व कालासागर तट से प्रधान पर्वतीय दीवार का आरम्भ होता है। यह दीवार २०० मील पूर्व की ओर चली गई है। इस लम्बी पर्वतीय दीवार में कोई भी दर्रा १० हज़ार फ़ुट से नीचा नहीं है। इस श्रेणी में एल्बुर्ज़ और शकारा की चोटियां १९ हज़ार और १७ हज़ार फ़ुट ऊँची हैं। काज्बेक के समीप ही उसके पूर्व की ओर दरयाल का प्रसिद्ध दर्रा स्थित है। यह १६ हज़ार फ़ुट की ऊँचाई पर है। इस दर्रे से होकर उत्तरी पर्वतीय ढालों से दक्षिणी पर्वतीय ढालों का मार्ग है। क़ाज्बेक प्रदेश से दक्षिण-पूर्व दाग़िस्तान की पहाड़ियां २५० मील की लम्बाई में फैली हैं। यह पहाड़ियाँ कास्पियन सागर तक फैली हुई हैं।

इस पर्वतीय श्रेणी से असंख्य धाराएँ निकलती हैं जो उत्तर तथा दक्षिण की ओर ढालू प्रदेशों में बहती हैं। धाराओं को हिमागरों के पिघलने से जल मिलता है। उत्तर की ओर कूबान नदी है। कूबान काले सागर में प्रवेश करती है। कूमा और टेरेक नदियां कास्पियन सागर में गिरती हैं। वह दोनों नदियां उस नमक के बड़े मैदान से होकर बहती हैं जो किसी

समय में एक सागर था और तथा कालासागर कास्पियन सागर को मिलाता था। दक्षिण की ओर इंगूर और रिओन नदियां मिंग्रेलियन मैदान में होकर बहती हैं और काले सागर तक पहुँचती हैं। कुर नदी आर्मेनिया के पठार से चलती है और अरेक्सस (अरास) नदी का जल लेती एक दलदली डेल्टा में समाप्त हो जाती है। यह डेल्टा अफशेरोन प्रायद्वीप के दक्षिण कास्पियन सागर की अगाध खाड़ी में स्थित है रिओन और कुर नदियों के ऊपरी भाग के मध्य से सुराम श्रेणी का आरम्भ होता है। यह श्रेणी आर्मेनिया की पहाड़ियों को काकेशिया की पहाड़ियों से मिलाती है। इसी श्रेणी की एक शाखा दक्षिणी दागिस्तान में १५० मील लम्बाई में फैली है जिसको काराबाग श्रेणी कहते हैं। उत्तरी तथा दक्षिणी पहाड़ी श्रेणियों और उनकी शाखाओं के मध्य कटोरे की भांति रिओन और कुर घाटियां स्थित हैं।

काकेशिया की दुर्गम पर्वतीय श्रेणी का प्रभाव इतिहास पर बहुत गहरा पड़ा है। प्राचीन काल में काकेशिया को लोग अपनी भौगोलिक सीमा का अंत मानते थे। उनका विचार था कि इसके आगे रहस्यमय शून्य तथा अंधकार स्थान है जिसमें "गोग और मगोग" लोग निवास करते हैं। काकेशिया दक्षिणी एशिया की रक्षा एक दीवार की भांति करता था। यह पूर्वी दुनिया को दो भागों में विभाजित करता था। इसके उत्तर में असभ्य घूमने वाली (खानाबदोश) जातियां रहती थीं और दक्षिण में मैसोपोटामिया की घाटियों तथा रूम सागरीय तटीय देशों के निवासी थे जिन्होंने सदियों अपने देश में रहकर स्वतंत्रतापूर्वक अपनी संस्कृति को उन्नति दी। उसके पश्चात् आर्य जाति रूम सागरीय

तथा सेमिटिक जातियों के देश तथा ईरान और भारत में आई। आर्य जाति काकेशस पर्वत के कारण कास्पियन सागर के पूर्व चक्कर लगाकर भारत तथा ईरान में और सीदिया, थ्रेस और बास्फरस होकर लघु एशिया (माइनर) में पहुँची थी। आर्य जाति के हज़ारों वर्ष पश्चात् ह्यूरन, स्लोवान और तुर्क खानाबदोश जातियां फारस, एशियाई रोम तथा सीदिया होकर बल्कान और पश्चिमी योरुप में पहुँचीं। उसके फिर हज़ारों वर्ष के बाद सेल्जूक तुर्क तथा मंगोल जातियां फारस और अरब साम्राज्य को तोड़ती हुई आगे बढ़ीं।

उत्तर से काकेशिया होकर दक्षिण आने को दो मार्ग (पहाड़ी दर्रे) थे जिनसे होकर आना सम्भव था। इनमें एक मार्ग मध्य-वर्ती पर्वतीय श्रेणी होकर दारयाल होकर था। दारयाल का शुद्ध रूप दर्रे-अलान (अलान सड़क) है। यह दर्रे प्राचीन काल में आरबेरियन द्वार के नाम से प्रसिद्ध था। दूसरा मार्ग कास्पियन सागर और पहाड़ों के मध्य (दलदली) प्रदेश होकर था। यह मार्ग एक स्थान पर दो मील चौड़ा था। इस मार्ग को फारस निवासी दरबन्द के नाम से, अरब लोग बाबुल-अब्वाब के नाम से और रोमन लोग कास्पियन द्वार के नाम से पुकारते थे।

इन दोनों मार्गों की रक्षा ईरान और आरमेनिमा के शासक बड़ी बुद्धिमानी से करते थे। इस प्रकार कुर घाटी दक्षिणी-पश्चिमी देशों के राजाओं की सीमा थी और ईरान तथा एशिया कोचक के शासकों में इसके सम्बन्ध में बहुधा लड़ाइयाँ हुआ करती थीं। रोम, पारथिया, बैजंटाइन, फारस पूर्वी खलीफा सेल्जुक, मंगोल और उसमानी आदि शासकों में इन मार्गों के

लिये अनेकानेक युद्ध हुये और प्रत्येक शासक ने कुर तथा रिओन घाटियों होकर एक दूसरे को पराजित करने का प्रयत्न किया।

इन लड़ाइयों के कारण उपर्युक्त शासकों की शक्तियां नष्ट हुई और आरमेनिया तथा जार्जिया के निवासियों का विध्वंस हुआ। आरमेनिया और जार्जिया की जातियों का इतिहास तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। (१) वह काल जब कि इन प्रदेशों पर इनके उत्तरी, × दक्षिणी, × पूर्वी और पश्चिमी पड़ोसी राज्यों का प्रभुत्व बारी बारी से रहा। (२) वह काल जब कि इन पर विदेशी शासन रहा और ये अरब, वैजेंटाइन, मंगोल तुर्क, फारस और रूसी साम्राज्य के एक अंग बने रहे। (३) वह अल्पकाल जब कि इनमें से एक या सभी मिलकर स्वतंत्रतापूर्वक अपना शासन करते रहे।

आर्मेनिया और जार्जिया का इतिहास धोकेबाज़ी, हत्या और निर्दयतापूर्ण घटनाओं से भरा है। राजा लोग बहुधा एक दूसरे पर आक्रमण करके युद्ध आरम्भ कर देते थे। इन लगातार लड़ाइयों के फलस्वरूप आर्मेनिया और जार्जिया राज्यों में संस्कृति का उत्थान न हो सका और देश आर्थिक, व्यापारिक, नैतिक, सामाजिक, कृषक तथा राजनैतिक उन्नति से विमुख रहे।

संक्षिप्त इतिहास

अज़रबैजान के तातार या तुर्क लोग कुर और अरास की निचली घाटियों के निवासी हैं। दरबन्द से लेंकोरन तक कास्पियन सागर के तट पर भी तातार लोग रहते हैं। टिफलिस राज्य के पूर्व तातार लोगों के साथ जार्जियन लोग भी मिश्रित हैं। ज़कातालो की तुर्क जाति में जार्जियन तथा लेस्गियन जाति के लोग मिश्रित हैं। बाकू के तेल प्रदेश में रूसी, आरमेनी, पोल और दूसरी जातियों के लोग भी निवास करते हैं। यह जातियां १८७० ई० के पश्चात् आकर बसी हैं। तालिश के दक्षिणी तटीय प्रदेश की तातार जाति में ईरानी लोग भी मिश्रित हैं। जंगेज़ूर और कड़ाबाग़ में तातार, आरमेनी, कुर्द और दूसरी घूमनेवाली जातियां रहती हैं। इसी भाग में आरमेनी और तातार जाति में धार्मिक झगड़े भीषण रूप धारण कर गये थे। आरमेनी किसान लोग पहाड़ी भूमि में रहते हैं और खेती करते हैं। तातार खानाबदोश लोग गल्ले बानी करते हैं वह अपने गल्लों को कड़ाबाग़, मिल और मुग़न के चरागाहों में चराते हैं। तातार लोग शीतकाल में आरमेनी जाति के लोगों को चरागाहों से भगा देते थे। धीरे धीरे इसी कारण इन दोनों जातियों के नेताओं में भीषण आर्थिक झगड़े उत्पन्न होगये।

पूर्वी ट्रान्स काकेशिया में तुर्क भाषा बोलने वाले लोग अभी हाल ही में अरब से आये हैं। हेरोडोटस राजा के समय में कुर और अरास की घाटियों में काकेशिया की प्राचीन जाति के लोग रहते थे। तालिश प्रदेश में फारसी-आर्य लोग रहते थे। फारसी-आर्य लोग गास्पाई के नाम से प्रसिद्ध हैं। अल्बानी (योरुप के अल्बानी नहीं) जाति के लोग काकेशिया के प्राचीन निवासियों में

से हैं और उनका सम्बन्ध आइबेरियन और कोल्बियन जातियों से हैं। गारपाई जाति धीरे धीरे अल्बानी जाति में घुल-मिल गई परन्तु फारसी आक्रमणों के कारण ईरानी जाति बनी रही क्योंकि जब कभी भी फारसी जाति का आक्रमण होता था कुछ न कुछ फारसी सैनिक बस जाते थे।

बी० सी० सातवीं सदी (ईसा से पूर्व) से काकेशिया के उत्तरी घास के मैदानों से लोग आने लगे। इनमें जो लोग बाद में आये वह तुर्क जाति के लोग थे। ७०० वर्षों तक उत्तर की ओर से भिन्न भिन्न जातियों का आक्रमण होता रहा और वह आकर बसतीं रहीं। फारसी लोग दरबन्द पर उन्हें रोकते रहे परन्तु उन्हें पूर्ण सफलता नहीं मिली। जब अरब जाति ने काकेशिया की विजय की तो फारसियों की भांति उन्होंने भी दरबन्द सीमा को आक्रमणकारियों के रोकने के लिये मजबूत किया परन्तु आठवीं सदी ई० तक वह क़ज़र जाति की सैनिक शक्ति को तोड़ने में सफल नहीं हुई। आठवीं सदी में अरब जाति ने क़ज़र जाति पर विजय प्राप्त की और दरबन्द से दरयाल तक अपनी सीमा को मजबूत बनाया। जब कुर और अरास घाटियों में तुर्क जाति ने अपनी जड़ जमाई तब अल्बानी जाति का वहां से लोप होगया।

अरब जाति ने मुसलमानी संस्कृति तथा धर्म का प्रचार ज़ोरों के साथ किया जिससे पूर्वी ट्रान्स काकेशिया में मुसलमानी धर्म जड़ पकड़ गया।

ग्यारहवीं सदी में सेल्जुक जाति ने आक्रमण किये जिससे शिर्वान, अरन और मुग़ल जाति के तुर्क और अधिक शक्तिशाली

होगये। सेल्जुक जाति के आक्रमण हुये और उसने भी काकेशस प्रदेश पर अपने पैर जमा लिये।

कुर और अरास के घास के मैदान आक्रमणकारी घूमनेवाली जातियों के लिये बड़े ही अनुकूल थे। घुड़सवार आक्रमणकारी सेनाएँ मुग़ान के मैदान में आकर डेरा डाल देती थीं और फिर जार्जिया, आर्मेनिया और उत्तरी-पश्चिमी फारस पर आक्रमण करती रहती थीं।

तेरहवीं सदी में मंगोल जाति के आक्रमण आरम्भ हुये और मुग़ान में शीतकाल में और कड़ाबाग़ में ग्रीष्मकाल में उनका डेरा रहने लगा। इस प्रकार इक्कीस सौ वर्षों में काकेशिया की प्राचीन जाति का धीरे धीरे लोप होगया और तुर्को-मंगोलियन या तातार जाति वहां बस गई।

अरब जाति ने सर्व प्रथम कुर और अरास घाटियों पर अपना पूर्णरूप से अधिकार जमाया था। अरब साम्राज्य के समय में कास्पियन सागर में व्यापार आरम्भ हुआ। अरब सेना की रक्षा में ट्रॉस काकेशिया की आर्थिक तथा राजनैतिक उन्नति हुई और शिर्वान, अरन और मुग़ान प्रान्त शीघ्र ही धनी होगये और अब अरब साम्राज्य के प्रसिद्ध अंग बन गये। मुग़ान और कड़ाबाग़ में अरब नगरों, नहरों और सड़कों के अब भी बहुत से चिन्ह पाये जाते हैं।

उरन की राजधानी बर्दा से कर्मानशाह, तबरेज़ और डाबिल होती हुई आर्मेनिया के नगरों को सड़क जाती थी। राम से अर्दबिल होती हुई राजधानी को सड़क जाती थी। मुग़ान मैदान

के नगरों से भी सड़कें गई थीं। तिफलिस और शेमक़ से भी सड़कें राजधानी को जाती थीं।

मुसलिम साम्राज्य के उत्तरी-पूर्वी सीमा कोण पर दरबन्द-बाबुल-अब्बाब या अरब भौगोलिक विद्वानों का "द्वारों का द्वार" स्थित था। यह स्थान व्यापारिक केन्द्र था। अनाज, फर, नमदा) शहद, मोम, सूती कपड़ा आदि का वहां बड़ा व्यापार होता था।

अरब साम्राज्य के छिन्न-भिन्न होने पर तीन-चार सदियों तक ट्रांस काकेशिया पर मध्य एशिया के घास के मैदानों की जातियों के आक्रमण होते रहे। इन जातियों ने बाल्टिक से लाल सागर तक की समस्त भूमि को लूट-पाट मचाकर नष्ट कर दिया गया।

१२३६-१४९८ ई० तक ट्रांस काकेशिया पर मंगोल जाति का और १४९८ से १७ ६ ई० तक फारस के सफावी गंश का शासन रहा। उसके बाद मुसलमान खानों के समय में ट्रांस काकेशिया को कुछ स्वतंत्रता मिली जिससे प्रदेश कुछ धनी होगया और मध्य एशिया तथा फारस के साथ फर, रेशम और चावल आदि का व्यापार होता था। उस समय भी बाकू तेल का केन्द्र था।

अठारहवीं सदी में पीटर बड़े के समय में रूस का संगठन हुआ और रूस के सीमावर्ती मुसलमानी राज्यों की अवनति हुई। रूस की सैनिक शक्ति भी बड़ी तगड़ी पड़ गई थी। रूसी शासक तुर्की तथा ईरानी राज्य की भूमि छीन कर काले सागर तथा कास्पियन सागर पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता था। लगभग

काकेशिया-दर्शन

१०० वर्षों तक युद्ध करने के पश्चात् अरास के उत्तरी प्रदेश तथा कास्पियन सागर पर रूस का अधिकार हो गया।

१८१३ ई० की गुलिस्तां की संधि के अनुसार रूस को दरबन्द, बाकू, शिरवान, शेकी गुजा (एलिसावे पोल) और लेनकोरन स्थान प्राप्त हुये।

१८२७ ई० में तुर्कमांची की संधि हुई और उसके अनुसार रूस को एरीवान, नारवीचेवान और तालिश के दक्षिणी भाग मिले। रूसी शासन में तातार लोगों की माली हालत सुधर गई। रूसी साम्राज्य की सरकार ने रेलवे, सड़कें टेलीग्राफ और तार आदि का भी प्रबन्ध कर दिया। कुर घाटी के तातार किसान खेती करने लगे। वह अंगूर की वाटिकाएं उगाने लगे और रेशम तैयार करने लगे। दक्षिणी चरागाहों में तातार लोग गल्ले बानी का रोजगार करते थे। १८७३ ई० में जब बाकू की यकायक उन्नति हुई और वहां तेल के कारखानें खुले तो लाखों तातार लोग वहां जाकर तेल के क्षेत्रों में काम करने लगे।

जमीदार वर्ग पहले तो रूसी शासन के विरुद्ध रहा। पर फिर वह भी उनका सहयोगी बन गया। धनी बेग लोग जो प्राचीन मत के मानने वाले थे और शिकार तथा सैनिक कार्यों से अधिक चाव रखते थे वह शीघ्र ही रूसी अफसरों के साथ घुल-मिल गये। बाकू की उन्नति से तातार लोगों का एक नवीन मध्यम श्रेणी वर्ग बन गया जिसमें मैनेजर, इंजीनियर, वकील और व्यापारी लोग शामिल हैं। यह लोग प्राकृतिक रूप से इस्लाम मत को मानते हैं परन्तु यह लोग रूसी उच्च-वर्ग से मिल जाने में बड़े खुश हुये।

स्थानीय राजनीति खासकर पूर्वी काकेशिया की आरम्भ काल में धार्मिक तथा संकुचित राष्ट्रवादी थी। तातार लोग रूसी सरकार का बिरोध तो करते ही थे साथ ही साथ वह आरमेनिया के ईसाइयों के घोर विरोधी थे। तातार बेग लोगों और आरमेनियन लोगों के मध्य शत्रुता प्राचीन समय से चली आती है। तातार लोगों ने पहले आरमेनियन लोगों पर बड़े बड़े अत्याचार किये थे। जब गुलितां और तुर्क मांची की संधियां हुई तो बहुत से आरमेनियन लोग गुलाम तातार बेगों के शिकंजे से छुड़ाये गये थे।

जब रूस का काकेशिया पर शासन आरम्भ हुआ तो पचास वर्षों तक रूसी सरकार ने आरमेनियन जाति को प्रोत्साहन दिया। बाकू प्रदेश में आर्मेनियन लोग अधिक उन्नति कर गये। टर्की से भी आर्मेनियन लोग काकेशिया में आकर बसने लगे जिससे तातार लोगों को भय प्रतीत हुआ। उन्नीसवीं सदी के अंतिम काल में रूसी साम्राज्य में सामजिक खराबियां उत्पन्न हो गईं। टिफलिस नगर में टर्की के विरुद्ध एक आरमेनियन संस्था खोली गई। इस संस्था का सम्बन्ध रूस की जारविरोधी संस्थाओं से था। इसलिये रूसी सरकार ने अपनी नीति बदल दी और आरमेनी लोगों पर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। इस नीति से तातार लोग बहुत प्रसन्न हुये। जब १९०३-६ तक रूस में क्रान्तिकारी झगड़े हुये तो तातार और आरमेनी लोगों में भी जातीय झगड़े उत्पन्न हो गये। १९०३ ई० में बाकू के आरमेनी तथा रूसी काम करने वालों ने हड़तालें कीं। ट्रांसकाकेशस रेलवे

लाइन में भी हड़तालें हुई। यह हड़तालें देखने में तो आर्थिक थीं। परन्तु वास्तव में राजनैतिक थीं।

रूसी शासकों को जब रूस से सेना काकेशस प्रदेश के आर्मे-नियन तथा रूसियों के लिये प्राप्त न हुई तो उन्होंने रोमन तथा अंग्रेजों की नीति से काम लिया और तातार तथा आरमेनी लोगों में झगड़ा करा दिया और तातार लोगों का साथ दे दिया। १९०५ ई० में बाकू में तातार तथा आरमेनी लोगों में भीषण झगड़ा हो गया और नगर में आग तथा तलवार के अतिरिक्त कुछ दिखाई न पड़ता था। जब कोई तातार अपनी तलवार से किसी आरमेनी का सिर काट लेता था तो रूसी शासक उसकी पीठ ठोंकते थे और शाबाशी देते थे। बाकू का गवरनर (जो एक जार्जियन सरदार था उसने) आरमेनियन की रक्षा का कुछ भी प्रयत्न न किया। जब तातार लोगों ने आक्रमण आरम्भ किये तो एरिवान, नार्वीचेवान एलिसवेरपोल, शूशा तिफलिस और बाकू में झगड़े हुये जिसके फल स्वरूप कई सौ तातार तथा आरमेनी मारे गये।

१९०५ में रूस की सरकार को तातार की बढ़ती शक्ति देखकर भय प्रतीत हुआ इसीलिये जब बोरोंटसोम-दाश्कोम नया वाइसराय नियुक्त किया तो उसने आरमेनी लोगों के प्रति अधिक मित्रता-पूर्ण बर्ताव किया। १९०६ ई० के पश्चात् आरमेनी और जार्जियन लोगों के मध्य आर्थिक तथा राजनैतिक हलचलों की प्रबलता रही। भांति भांति की राजनैतिक संस्थाएँ स्थापित हो गईं। तातार लोग अपने को संगठित करने में बहुत पीछे रहे और अंत में बाकू में तातार लोगों का मुसावेस क्लब खुला। इस संस्था के संचालक जमींदार, पूंजीपति और मिलों के धनी

संचालक थे। यह संस्था आर्थिक रूप से तातार जाति की सहायता तथा उन्नति करना चाहती थी परन्तु राजनैतिक दृष्टि से यह संस्था क़ज़ान और क्राइमिया के तातारों से मिलना चाहती थी और शान्ति रूप से रूसी साम्राज्य के तातार लोगों को सांस्कृतिक उन्नति देना चाहती थी। परन्तु रूस, टर्की और फारस में जो घटनाएं तथा क्रांतियां हुई उनका प्रभाव इस संस्था पर गहरा पड़ा। बहुतेरे तातार मुसलमानी तथा तूरानी मतानुसार चलने का विचार करने लगे।

१९१४ ई० के अन्त में जब रूस से युद्ध छिड़ने को था युवक तुर्कों ने उस्मानी (आटोमन) रूमानी, कुछ जारजियन और कुछ तातार लोगों से मेल-जोल उत्पन्न किया और काकेशिया में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का विचार किया गया। यह राज्य आटोमन साम्राज्य के अंतर्गत रहने को था। परन्तु आरमेनी लोगों ने इसका विरोध किया और अपना भाग्य मित्र-राष्ट्रों के हाथों सौंप दिया। तातार लोगों के मध्य भी तुर्की प्रचार न हो सका और रूसी सेना में तातार लोग स्वयं सेवक के रूप में काम करते रहे।

राष्ट्रवाद तथा सामाजिक क्रान्ति १८११-१९१०

ट्रांस काकेशिया पर रूसी अधिकार होने से उसकी सैनिक रूप से रक्षा हो गई इसलिये जार्जियन तथा आरमेनी लोगों को शान्त रूप से उन्नति करने का अवसर प्राप्त होगया। रूसी शासन के कारण काकेशिया के सरदार शक्तिहीन होगये और

गरीब तथा मजदूर 'और किसान कुछ स्वतन्त्र बन गये। प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति करने का अवसर प्राप्त होने लगा। ट्रांस काकेशिया के निवासी रूसी सेना तथा सिविल सर्विस में भर्ती होने लगे। रेल, तार और सड़कों की वृद्धि हुई, खेती आधुनिक ढंग से की जाने लगी। काकेशिया में रूसी शासन द्वारा शान्ति स्थापित करने के कारण आर्थिक साधनों की बड़ी उन्नति हुई।

१८८२ ई० तक काकेशिया का शासन रूसी वाइसराय के हाथ में रहा। वाइसराय की नियुक्ति रूस का ज़ार करता था। १८८२ से १९०५ ई० तक वाइसराय के स्थान पर गवरनर जनरल शासन करता रहा। गवरनर जनरल के ऊपर निरीक्षण करने के लिये सेंट पीटर्सबर्ग में काकेशियाई कौंसिल बनाई गई थी। दाग़िस्तान, सुक़ूम, बाटूम और कर्स के प्रान्तों (सैनिक अफसरों के प्रान्त) को छोड़ कर सभी प्रान्त गवरनरों के अधिकार में थे। प्रान्तों का विभाजन ज़िलों में किया गया था। ज़िलों का अफसर नाचनीलक कहलाता था। एक ज़िले में कई एक वोलोस्ट (तहसील) होते थे। वोलोस्ट का शासक वोलोस्टन्वाय स्टारशीना कहलाता था। वोलोस्टन्वाय स्टारशीना का चुनाव प्रजा प्रत्येक गाँव के सरदार की सहायता से करती थी। गाँव के सरदार या मुखिया को स्टारोश करते थे। रूसी सरकार अपनी नीति के अनुसार काकेशिया को रूसी बनाना चाहती थी इसी कारण रूसी सरकार के विरुद्ध राष्ट्रीय तथा अग्रगामी आन्दोलनों का जन्म हुआ।

रूसी शासन के कारण काकेशिया में भाषा सम्बन्धी पुर्नसंगठन हुआ और सिकन्दर, इलिया, चावचावेज़ जियोर्गी

एरिस्टावी, ग्रिगोर ओबेंलियन और इवे मकावेली आदि प्रसिद्ध लेखक हुये जिन्होने दैनिक पत्रों को जन्म दिया।

ट्रांस काकेशिया में रूस के मज़दूर खानों तथा कारखानों में काम करने के लिये आये उन मज़दूरों ने काकेशिया में भी समाजवाद के बीज बो दिये जिसका सर्व प्रथम प्रभाव तिफलिस नगर पर पड़ा। मिट्टी का तेल, गंधक तांबा आदि निकालने तथा रेशम, कपास, लकड़ी और शराब की उपज को संगठित करने और उन्नति देने के लिये कम्पनियां स्थापित होगईं। आर्थिक साधनों में रुपया विदेशी पूंजीपतियों ने लगाया क्योंकि उन्हें काकेशिया के मज़दूर बहुत ही सस्ते मिले। इस प्रकार रूस में कारखानों और रोज़गार सम्बन्धी कार्यों की उन्नति हुई और धीरे धीरे ज़मींदारी प्रथा की अवनति होने लगी। बाटूम और बाकू आदि नगरों के कारखानों से जो मज़दूर काम करके अपने घरों को लौट कर जाते थे वह अपने साथ ही साथ मार्क्स और एंगिल्स के मतों को ले जाते थे और देहात में प्रचार करते थे। थोड़े समय में ही जार्जिया में रूसी-समाज-प्रजातंत्रवाद संस्था की स्थापना होगई। तिफलिस, कुटैस, पोटी और बाटूम इस संस्था के प्रधान केन्द्र थे। एसाजिब्लाज़े, निनीशविली और जी० सेरेटेली आदि जार्जियन समाजवाद के प्रधान नेता थे।

१९०६ ई० में रेलवे के काम करनेवालों ने भी एक ट्रेड-यूनियन (व्यापार-संगठन) संस्था स्थापित की। इसके बाद प्रिंटर्स, लेखक कारखानों के मज़दूर आदि की भी अपनी अपनी संस्थाएं संगठित रूप से स्थापित होगईं।

आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति के साथ ही साथ काकेशिया

की भिन्न-भिन्न जातियां में द्वेष-भाव उत्पन्न होगया और रूसी सरकार ने भी आपस में फूट डाल दी राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जागृति हुई। इन्हीं तमाम कारणों से १९०४ से १९०६ ई० तक काकेशस प्रदेश में क्रान्ति की लहर चलती रही। बाकू आरमेनोतातार प्रदेश, जार्जिया और तिफलिस आदि में भीषण झगड़े हुये जिससे बहुत से लोग मारे गये। रूसी सरकार ने शान्ति स्थापित करने के लिये दूसरा वाइसराय नियुक्त किया और काकेशिया को डूमा (कौंसिल) में २९ सदस्य भेजने का अधिकार प्रदान किया गया।

टर्की मुसलमानों और तातार लोगों का पक्ष कर रहा था वह उन्हें भड़का कर अपनी ओर खींचना और स्वतंत्र करना चाहता था। टर्की के कारण ही तातार लोग बहुत बढ़ गये थे।

१९१४ ई० में योरुप में युद्ध छिड़ गया। युद्ध छिड़ जाने पर रूस और जर्मनी में भी युद्ध होने लगा। रूस मित्र-राष्ट्रों का सहयोगी था। टर्की का रुख आस्ट्रिया, हंगारी और जर्मनी की ओर था। बाद में टर्की पूर्ण रूप से जर्मनी का साथी बन गया और मित्रराष्ट्रों के बिरुद्ध युद्ध लड़ने लगा। टर्की के तातार भी रूस के विरुद्ध काम करने लगे और अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की बात सोचने लगे। टर्की ने उन्हें पूर्ण रूप से सहयोग दिया।

काकेशिया में उस समय तीन वर्ग थे। १—टर्की का सहकारी २—रूस का सहकारी ३—राष्ट्रवादी। टर्की का सहकारी दल काकेशस प्रदेश को टर्की के साथ मिलाना चाहता था या

स्वतंत्र मुसलमानी राज्य टर्की के आधिपत्व में स्थापित करना चाहता था उसने जर्मनी तथा टर्की से सैनिक सहायता भी मांगी। दूसरा वर्ग काकेशिया के प्रान्तों को संगठित करके संगठित संघ-शासन स्थापित करना चाहता था। तीसरा वर्ग रूस के साथ रहकर ही अपनी आर्थिक, राजनैतिक तथा सामाजिक उन्नति करना चाहता था।

दिसम्बर १९१४ ई० और १९१५ ई० के अन्त में मकावेली (जार्जियन) सलीम वेग बेबूतोव (तातार) ईसा पाशा (लेस्गी) दो तुर्की अफसर और फुआद पाशा (सरकासियन) बर्लिन गये और उन्होंने काकेशिया के संगठित राज्य स्थापित करने के लिये मध्य योरुपीय राज्यों की सहायता मांगी। जब १९१७ ई० में रूस में क्रान्ति हुई तो काकेशिया में उसका स्वागत हुआ। काकेशिया के समाजवादी प्रजातांत्रिक लोगों ने काकेशिया में रूसी संघशासन वाले प्रजातंत्र राज्य की स्थापना करने के लिये जोर दिया। इस मत के मानने वाले काकेशश प्रांन्त में अधिक लोग थे। मई १९१७ ई० में मानने वाले काकेशश प्रान्त में अधिक लोग थे। मई १९१७ ई० में उत्तरी काकेशिया ने व्लाडी-क०काज्र स्थान पर अपने यूनियन (संघ) की घोषणा की और रूस से अलग हो जाने पर जोर दिया और रूस से अलग होकर दक्षिणी-पूर्वी यूनियन के साथ मिल गया।

२ दिसम्बर १९१७ ई० को माउंटेनेयर्स ने अपने संघ की घोषणा की और कर्नल टामा चेम्बायएव के नेतृत्व में क्षणिक सरकार बनाई। १९१८ ई० के आरम्भ काल में बोल्शेविक और कोसक सेनाएँ रेलवे लाइन होकर मियरल नैश्रासे वेस्लान तक

बढ़ीं। माउंटेनियर्स सेना उनका सामना न कर सकी और व्लाडी-कव्काज़ तथा ग्रीज्नी से हट गई। माउंटेनियर्स ने पहले अपनी राजधानी नाज़रन हटाई फिर वहां से हटकर टेमिर-खान-शूर को राजधानी बनाया।

राष्ट्रीय भावनाओं तथा मतों और दलों के होते हुये भी ट्रांस काकेशिया की सामाजिक प्रजातंत्रवादी कमसरियट ने रूस के साथ ही मिलने पर ज़ोर दिया। नवम्बर १९१७ ई० में जार्जियन राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी इसी मत पर अपनी सम्मत्ति प्रकट की।

जनबरी १९१८ ई० में आटोमन सरकार ने अपना नाम स्वतन्त्र ट्रांस काकेशियन सरकार रक्खा और ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि में भाग लेने के लिये निश्चय किया। फरवरी में टर्की की सेना ने अर्ज़िञ्जान, बेरूत, त्रिबिज़न्द पर अधिकार जमा लिया। दूसरी मार्च को बाटूम, अर्दहान और कर्स ज़िलों पर भी टर्की ने ट्रांस काकेशिया की सरकार के विरुद्ध बोल्शेविकों के कहने पर अधिकार जमा लिया। धीरे धीरे तुर्की सेना ने उस समस्त प्रदेश पर अधिकार कर लिया जो १८७८ ई० में टर्की के हाथ से निकल गये थे। उसके बाद टर्की आगे बढ़ा और १५ मई को सिकन्द्रोपोल और पहली जून को एलिसोवपोल पर अधिकार जमा लिया।

नवम्बर १९१८ ई० में क्षणिक संधि होने पर ट्रांस काकेशिया की स्थिति में परिवर्तन हुआ और जार्जिया तथा अज़र-बैजान से जर्मन और तुर्की सेनाएँ हटा दी गईं। ब्रिटिश सेना

ने बाटूम, बाकू और ट्रांस काकेशियन रेलवे लाइन पर तथा अरमेनी सेना ने सिकन्द्रोपोल, कर्स, अर्दहान और अर्दनुच पर अधिकार कर लिया। अगस्त १९१९ ई० में ब्रिटिश सेना ने बाटूम के अतिरिक्त समस्त काकेशिया के स्थानों को छोड़ दिया। २७ अप्रैल को बोलशेविकों ने बाकू पर अपना अधिकार जमा लिया। अप्रैल मास में बोल्शेविकों ने गम्री ज़िले पर अधिकार कर लिया और गोरी ज़िले पर आक्रमण किया। परन्तु पोलिश युद्ध के कारण १२ जून को सोवियत सरकार ने मास्को की संधि के अनुसार जार्जिया की स्वतंत्रता स्वीकार की। परन्तु श्वेत सेना की पराजय के पश्चात् बोल्शेविकों ने फिर काकेशिया में युद्ध छेड़ दिया और धीरे धीरे नगरों पर अधिकार करना आरम्भ किया। ३ मार्च १९२१ ई० के पश्चात् बोल्शेविकों ने बाटूम और टिफलिस नगरों में सोवियतों की स्थापना की। यह सोवियतें जार्जिया के बोल्शेविकों के अंतरगत स्थापित की गई थीं। अंगोरा और मास्को के मध्य इसी बीच एक संधि हुई जिसके अनुसार अर्दहान अर्तविन और कर्स नगर तुर्क सरकार को दे दिये गये और बाटूम को तुर्क सामग्री विना चुंगी आने जाने लगी।

रूसी क्रांति और प्रजातंत्र राज्य

जब मार्च १९१७ ई० में क्रांति हुई तो तातार जाति ने बड़ी सावधानी से काम किया। तातार प्रजा ने क्रांति सम्बन्धी उत्सवों तथा कार्यों में भाग तो लिया परन्तु अधिक देश भक्ति का प्रदर्शन नहीं किया। अप्रैल १९१७ ई० में बाकू में मुसलमानों

की प्रथम कांग्रेस हुई। मुसावेत ने निश्चय किया कि वह क़ज़ान, क्राईमिया और तुर्किस्तान के तातार लोगों की भांति ही कार्य करेगी। मुसावेत ने काकेशिया के मुसलमानों की एक कमेटी तैयार की और उसे प्रजातांत्रिक सुधार का कार्यक्रम तैयार करने के लिये कहा। मुसावेत के सदस्य मई मास में मास्को भेजे गये। मास्को में समस्त रूस के मुसलमानों की एक कांग्रेस हुई। उसके पश्चात् बाकू में दूसरी तथा तीसरी कांग्रेस की गईं।

नवम्बर १९१७ ई० में बोल्शेविकों ने रूस के ज़ार शासन प्रणाली का अंत कर दिया। इस समाचार के प्राप्त होते ही ट्रांस-काकेशिया में अशांति फैल गई और बलवा होगया। टिफलिस के चार सदस्यों की समिति के स्थान पर शीघ्र ही चौदह सदस्यों की कमसरियट स्थापित की गई। इस कमसरियट को शासन करने की शक्ति सीम (धारा सभा) द्वारा प्रदान की गई थी। सीम में जार्जियन, रूसी, तातार और आर्मेनी सदस्य थे। बाकू कारखाने का केन्द्र था। इसलिये वहां बोल्शेविकों का जोर था। बोल्शेविकों के ज़ोर के कारण वहां एक सोवियट स्थापित की गई। शेमाखा, एलिसावेतपोल में प्रजा ने डाका डाले और स्थनीय बेग लोगों के हत्याकांड किये। जहां कहीं भिन्न भिन्न जाति के लोग एक साथ बसे थे वहां जातीय तथा वर्गीय जगड़े होगये। इन झगड़ों के होने तथा तुर्की सेना के पूर्व की ओर बढ़ने के कारण मुसावेत के लोग खुले रूप से टर्की का पक्ष करने लगे। जनवरी १९१८ ई० में तातार लोगों के समूहों ने घर लौटते हुये रूसी सैनिकों पर आक्रमण किया। शामखोर स्थान

पर इस प्रकार बहुत से रूसी सैनिक काट डाले गये। जब ट्रांस-काकेशिया की सीम (धारा सभा) को ब्रेस्टलिटोवस्क की संधि का समाचार प्राप्त हुआ तो तातार सदस्यों ने ऊँचे स्वर से संधि का समर्थन किया। १७ मार्च को मुसावेत ने बाकू में सोवियट के विरुद्ध विप्लव कराने का संगठन किया। परन्तु स्टेपनशूमियन नामक आर्मेनी सरदार ने बाकू के मुसलमानी बस्ती को नष्ट कर डाला और फिलंथ्रपिक संस्था के केन्द्र को नष्ट कर दिया। तीन दिन तक तातार लोग लड़ते रहे और लगभग २००० तातार मारे गये उसके बाद उनके नेता एलिजावेतपोल भाग गये जहाँ उन्होंने तुर्क सेना की सहायता के लिये सेना का संगठन किया। जब अलिक्ज़ंड्रोपोल पर टर्की का अधिकार होगया तो सीम (धारा सभा) छिन्न भिन्न होगई और टिफलिस, एरिवान और एलिसावेतपोल स्थानों पर जार्जियन, आर्मेनी तथा तातार लोगों ने अपनी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। तातार लोगों ने दक्षिणी दागेस्तान, बाकू और एलिसाबेतपोल को मिलाकर अज़ेरबैजान का प्रजातंत्र राज्य बनाया।

तीन जून को बाटूम स्थान पर तीनों प्रजातंत्र राज्यों और टर्की के मध्य एक 'संधि हुई जिसके अनुसार शत्रु राष्ट्रों को ट्रांस काकेशियन रेलवे लाइन के प्रयोग करने की सुविधा प्रदान की गई।

इस सुविधा के मिलते ही तुर्की सेना रेलवे लाइन होकर एलिसावेतपोल की ओर बढ़ी। शौमियन ने तुर्की-तातार सेना को रोकने का प्रयत्न किया परन्तु उसे सफलता नहीं हुई और तुर्की सेना बाकू के समीप पहुँच गई। तुर्की-तातार सेना का नेता नूरी

पाशा था। तुर्की-तातार सेना ने बाकू पर आक्रमण किया और १४ सितम्बर को संध्या के समय तातार सैनिकों ने बाकू में प्रवेश किया और तीन दिन तक नागरिकों की हत्या करते रहे। लगभग २० हज़ार आर्मेनी लोग मार डाले गये। उसके बाद बाकू में मुसावेत सरकार की स्थापना की गई जिसके खां कोहस्की, हसन अग़ीय और मेक्रमंडारोव भी सदस्य थे। उसके बाद तुर्की सेना ने पेट्रोव्स्क पर भी अधिकार कर लिया।

१९३८ ई० में क्षणिक संधि होने पर मेजर जनरल टामसन काकेशिया से तुर्क तथा जर्मन सैनिकों के निकल जाने पर ज़ोर देने लगा। बाकू में भी ब्रिटिश तथा रूसी सेना पहुँचाई गई। ब्रिटिश सेनापति बाकू की तातार सरकार को अप्रसन्न नहीं करना चाहता था। परन्तु रूसियों तथा बोल्शेविक लोगों के कारण तातार लोगों को मित्र सेना की ओर से दिन प्रति दिन संदेह बढ़ता गया। कुछ छोटी मोटी लड़ाइयों के पश्चात् अंत में रूसी सेना ने बाकू पर भी अधिकार कर लिया। उत्तरी काकेशिया तथा डान नदी के तट पर कोसक तथा तातार लोगों की संख्या अधिक थी। इसलिये रूस के राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्रों में तातार लोगों को भाग लेने और उन्नति करने की अधिक आशा थी। इसी कारण वह लोग टर्की के साथ न रहकर शायद रूस के साथ ही रहने में सहमत होगये।

१९२० ई० के पश्चात् रूस को सोवियट सरकार ने काकेशिया के प्रजातंत्र राज्यों में भी सोवियट सरकारें स्थापित कर दीं और ट्रांस-काकेशिया की उन्नति की ओर ध्यान दिया। आज

उसी का कारण है कि काकेशिया के निवासी रूसियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं।

पृथ्वी का सब से बड़ा खेत

काकेशिया में "जायंट" नाम का एक विशाल फार्म (खेत) है। यह खेत संसार का सब से बड़ा खेत है। इसका क्षेत्रफल ५ लाख एकड़ है। यह कालासागर के तट से दागिस्तान के पर्वतों तक फैला हुआ है। इसको सोवियट जायंट फार्म कहते हैं। इस खेत को एक दृष्टि से एक समय में देखना असम्भव है जब तक कि वायुयान पर बैठकर इसके ऊपर उड़कर इसको न देखा जाय। वायुयान पर से इसका समूचा दृश्य दिखाई पड़ता है। इस विशाल खेत में हज़ारों ट्रैक्टर तथा कृषक कलें हैं। कलों और ट्रैक्टरों द्वारा ही इसकी खेती होती है। इस खेत की खेती करके सोवियट रूस ने सिद्ध कर दिया है कि खेती का काम भी एक बड़े कारखाने की भांति किया जा सकता है।

खेती की बोवाई और कटाई के समय ट्रैक्टर जब एक लाइन में चलते हैं तो चलती हुई सेना सी दिखाई पड़ती है। इस बड़े खेत में टेलीफोन भी लगे हैं जिससे एक भाग को दूसरे भाग को शीघ्र ही समाचार जाते और आते रहते हैं। प्रत्येक वर्ष नये घास के मैदान खेती के योग्य बनाये जाते हैं। चौकीदार तथा खबर पहुँचानेवाले लोग घोड़े और मोटर साइ-किल पर चलते हैं। इस विशाल खेत के चारों ओर घास के मैदान तथा काल्मुक बस्तियाँ हैं। बुइक, फोर्ड और दूसरी मोटर गाड़ियों और कलों को इस विशाल खेत में काल्मुक

लोग उतनी ही सरलता से चलाते हैं जितनी सरलता से हमारे देश में किसान बैलों से हल चलाते हैं।

इस विशाल खेत के चारों ओर एक नया सोवियट नगर बस गया है जहाँ मज़दूरों की सुबिधा के लिये पार्क, सड़कें, चित्रालय, भोजनालय और होटल बने हैं। खेत में काम करने वाले इन्हीं स्थानों में सुख का जीवन व्यतीत करते हैं।

बाक़ू के तेल का कारखाना

१९१८ ई० के पहले बाकू के मिट्टी के तेल के निकालने का कार्य विदेशियों के हाथ में था। विदेशी लोग हमारे देश की भाँति वहां भी पैसा ऐंठना जानते थे और मज़दूरों को बड़ा कष्ट देते थे। १९१७ ई० में रूसी क्रांति के समय मज़दूरों में भी हलचल फैली और वह अपने कारखाने के विरुद्ध हड़ताल आदि करने लगे। युद्ध के कारण तेल का व्यय अधिक होगया था। परन्तु जितना अधिक व्यय था उतनी ही कमी उत्पत्ति में भी थी।

क्रांति के पश्चात् १९१८ ई० में समस्त रूस से तेल की मांग के लिये चिल्लाहट मच गई। सब कहीं तेल की कमी थी। मज़दूर काम करते करते थक गये। पानी से चलने वाली कलें नष्ट होगईं। विदेशी लोग अधिक रुपया नहीं लगाना चाहते थे क्योंकि उनका देश न था और आखिर उन्हें छोड़कर भागना ही तो था। विदेशी कारखाने के मालिक अपना अपना सामान लेकर चल दिये तब प्रश्न उठा कि आखिर तेल की मांग की पूर्ति कैसे की जाय।

ऐसी जटिल स्थिति में एस्नेफ्ट कम्पनी के मैनेजर कामरेड सेरेब्रोवस्की ने बड़ी चतुरता तथा साहस से काम लिया और उसने बोल्शेविक नियम के अनुसार एक नये ढंग से तेल की कम्पनी चलाने का विचार किया। उसने १९२० ई० में बाकू के जिले में कारखाना खोला और कम्पनी की ओर से कई जवान इंजीनियरों को अमरीका भेजा।

कुछ समय पश्चात् ही अमरीका से नई नई कलें और पुर्ज़े आने लगे। एस्नेफ्ट और उसके मज़दूर बाकू को आधुनिक बनाना चाहते थे। तेल से कलों को चलाने की व्यवस्था तोड़ दी गई और बिजली से काम आरम्भ किया गया। तेल के कारखाने जहाँ बनाए गये उस नगर का नाम ब्लैकटाउन (काला नगर) रक्खा गया। इस नगर में अमरीका से आनेवाली सभी कलें लगाई गईं। कलों का काम बिजली से होने लगा।

पहले मज़दूरों के साथ कारखाने के संचालक, मैनेजर आदि गुलामों की भांति व्यवहार करते थे। अतः मज़दूर उनसे बड़े अप्रसन्न रहते थे। मज़दूरों को नया कार्य सीखने की असुविधा भी थी। सदैव गरीब तथा निर्धन और निकम्मे ही रह जाते थे।

एस्नेफ्ट ने मज़दूरों को प्रत्येक भांति की सुविधाएँ प्राप्त करा दी और उनके साथ बराबरी का बर्ताव होने लगा। उन्होंने अपने मैनेजर कामरेड सेरेब्रोव्स्की का नाम "सिलवर बास" रक्खा। सिलवर का अर्थ है चांदी और बास कम्पनी या कारखाने के प्रबन्ध करता को कहते हैं। इस प्रकार "सिलवर बास" का

अर्थ चांदी प्रबन्धकर्ता हुआ। यह नाम मजदूरों ने अपने और प्रबन्धकर्ता में भेदभाव हटाने के लिये रक्खा था। उनका मैनेजर उनके लिये चांदी था। उसका हृदय चांदी की भांति था।

बल्कानी और आर्मेनीकंद में मजदूर लोग स्वच्छ वायु सेवन करते हैं। मजदूरों के लिये सुन्दर भवन तथा वाटिकाएँ बनाई गई हैं। वह बिजली द्वारा चलने वाली रेलगाड़ियों पर यात्रा करते हैं। मोटर आदि पर ही उन्हें चलना पड़ता है। उनके बच्चों तथा स्त्रियों की शिक्षा और काम के लिये भी उत्तम प्रबन्ध किया गया है। मजदूरों का जीवन ही बदल गया। वह एक नवीन युग में आ गये हैं। अब वह नये नये कार्य सीख कर एक पद से दूसरे पद पर जा सकते हैं। उनके लिये भिन्न भिन्न संस्थाएँ स्थापित हैं जहां वह सार्वजनिक कार्यों में भाग ले सकते हैं और सामाजिक जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

तेल के मजदूरों का जीवन सुखमय होगया है वह सिनेमा, ड्रामा, नाटक आदि शौक़ से देखते हैं। सोवियट संस्था ने उन्हें किसी प्रकार के सुख से वंचित नहीं रक्खा है। वह भी किसी न किसी पद के लिये परिश्रम कर सकते हैं और उस योग्य होकर उस पद पर पहुँच सकते हैं। स्टैलिन का जीता जागता उदाहरण उनके सामने है। कम्पनी के मालिक उनके साथ वही बर्ताव करते हैं जो एक भाई दूसरे भाई के साथ करता है।

संचालक, प्रबन्धकर्ता और मजदूर के कठिन परिश्रम और संगठन से तेल संसार में, रूस में नवीन युग आगया और बाकू

का प्रदेश समस्त रूस को ही नहीं वरन् संसार के और दूसरे देशों के तेल की मांग को भी पूर्ति करने लगे हैं।

काकेशिया के एक सूरमा की कहानी

बीसवीं सदी के आरम्भ काल में ज़ालिम खां ब्रिगेड का नाम रूस में चारों ओर दूर दूर तक प्रसिद्ध था। जालिम खां काकेशिया का निवासी था। वह एक पहाड़ी आदमी था। उसने अपने साथियों की एक सेना बनाई। इसके सैनिक पहाड़ी प्रदेश में घोड़े पर बड़ी खूबी के साथ शीघ्रता पूर्वक चलते थे। जालिम खां और उसके सैनिक ज़ार के अफसरों को बहुत परेशान करते थे। वह सरकारी खज़ाने को लूट लेते और ज़ार के फौजी अफसरों को पकड़ कर रुपया वसूल करते थे। एक बार ज़ालिम खां ने काकेशिया के गवर्नर जनरल को भी गिरफ्तार कर लिया था। उसके साथियों और उससे परेशान होकर रूसी सरकार ने उसकी गिरफ्तारी के लिये बहुत सा इनाम देने की घोषणा की परन्तु उसको गिरफ्तार करना असम्भव सा था। वह धनी लोगों को लूटता था परन्तु निर्धन गरीबों की सहायता करता था और सदा उनकी रक्षा के लिये तत्पर रहता था।

एक बार वह डान नदी पर रोस्टोव नगर गया। वहाँ जाकर उसने एक थियेटर में काकेशिया के गवर्नर जनरल से भेंट की और कहा कि वह टिफलिस से आया है और जार्जिया का निवासी है। उससे मिलकर गवर्नर जनरल साहब बड़े ही खुश हुये। जालिम खां और गवर्नर जनरल आपस में बातचीत करते करते मित्र से होगये। गवर्नर जनरल ने आपसी बातचीत

में जालिम खां के कार्यों की बड़ी प्रशंसा की। इस पर जार्जियन अफसर (जालिम खां) ने उत्तर दिया कि आपको इसके लिये धन्यवाद है परन्तु यह मुझे आपसे कभी भी आशा न थी कि आप अपने मुख से मेरी इतनी प्रशंसा करेंगे जब कि आपने मुझे गिरफ्तार करके फांसी पर लटकाने की घोषणा कर रक्खी है। गवर्नर जनरल को बड़ा आश्चर्य हुआ और उनकी आंखों के सामने आश्चर्य से अंधेरा छा गया।

जब उन्होंने अपनी आँखें साफ करके जार्जियन अफसर को देखना चाहा तो वह वहां न था। गवर्नर जनरल ने उसकी शीघ्र ही खोज की परन्तु उसका पता न चला। इसी प्रकार ज़ालिम खां के सम्बन्ध में और बहुत से क़िस्से कहानियां प्रसिद्ध हैं। काकेशिया के निवासी जालिम खां की याद अब भी बड़े आदर सत्कार के साथ करते हैं।

पानी में डूबने वाला बन

काकेशिया के कूबान प्रान्त में ऐसे बन हैं। जिनकी लकड़ी लोहे की भांति कड़ी तथा मज़बूत होती है। मज़बूत कड़ी लकड़ी में बाक्सउड सब से अधिक प्रसिद्ध है। बाक्सउड के बन संसार में केवल काकेशिया और ब्राज़ील में पाये जाते हैं। काकेशिया की घाटियों में इस लकड़ी के बन पाये जाते हैं। इस प्रकार की और दूसरी बहुमूल्य लकड़ियों के बहुत बन काकेशिया में पाये जाते हैं। जंगली पहाड़ी लोग इन बहुमूल्य लकड़ियों का मूल्य नहीं समझ सकते और वह उनका प्रयोग साधारण लकड़ी की भांति ही करते हैं। एक बार मैकोप नगर में

एक अमरीकन महाशय ने एक कोशक को देखा। वह बाक्सउड का एक बड़ा बोझ सिर पर लिये हुये बाज़ार में बेंचने जा रहा था। अमरीकन महाशय ने लकड़ी पहचान ली और लकड़ी के भार के बराबर आटा देकर लकड़ी खरीद ली। कोसक को अमरीकन व्यक्ति की उदारता पर बड़ा आश्चर्य हुआ। अमरीकन महाशय भी कोसक की अनभिज्ञता पर आश्चर्य प्रकट किया। कलमुक और एलिस्ता गांव के घरों में बहुमूल्य लकड़ी का प्रयोग घरों के बनाने में बहुत किया गया है।

कूबान ज़िले की सकरी घाटियों में जंगली पशु-पत्ती बहुत पाए जाते हैं। घाटी में ट्राउट मछली भी बहुत है जिसका लोग शिकार करते हैं। शिकार बड़ी सावधानी तथा सरलता के साथ हो सकता है। शिकारी को केवल पेड़ की एक टहनी को तोड़ कर पानी में डालने की आवश्यकता है। जैसे ही टहनी पानी में पड़ेगी वह डूब जायेगी और उसके ऊपर एक बड़ी ट्राउट मछली आपसे आप शीघ्र ही आ जावेगी।

कूबान के पहाड़ी प्रदेश के गांवों में प्राचीन मसज़िदें हैं जहां हस्तलिखित प्राचीन कुरान आदि मुसलमानी पुस्तकें रक्खी हैं। गांवों में लकड़ी, फौलाद आदि के सामान हाथ से तैयार किये जाते हैं जो समस्त संसार में भेजे जाते हैं। वेर्बलूद का फार्म (खेत) संसार में दूसरा बड़ा फार्म है।

जार्जिया के निवासियों का जीवन

जार्जिया के निवासियों ने बैज़ेंटाइन तथा फारसी कला-कौशल के अनुसार ही अपने भवनों को बनाया। प्राचीन काल

के तीन भवनों के खंडहर अब भी बने हैं जिनसे उनकी सुंदरता का पता चलता है। उच्च श्रेणी के लोग अपने घर पत्थरों के बड़े ही सुंदर बनाते हैं। मध्यम श्रेणी के घर दो-तल्ले बनाये जाते हैं जिसमें लकड़ी का प्रयोग अधिक होता है। घरों की छतें मिट्टी या लकड़ी के खपड़ों की बनाई जाती हैं। इस प्रकार के घर शीघ्र ही तैयार तथा नष्ट होते हैं। घरेलू पशुओं के लिये एक लम्बा कमरा बनाया जाता है। किसान तथा मज़दूरों के घर केवल झोंपड़े मात्र होते हैं। झोंपड़े लकड़ी तथा मिट्टी के तैयार किये जाते हैं। यह झोंपड़े बहुधा साग-तरकारी की लताओं से ढँकी दिखाई पड़ती हैं।

जार्जिया के नगर बहुत छोटे हैं। वह हमारे देश के केवल सड़क के एक गाँव के से होते हैं। नगर के घर बहुत समीप समीप बनाए जाते हैं जिससे गंदगी बहुत रहती है। कुर की घाटी में टिफलिस ही केवल एक ऐसा नगर है जहां विदेशी रीत-रिवाज और सभ्यता का प्रभाव पड़ा है। यह कुर घाटी का प्रधान व्यापारिक नगर है। समस्त काकेशिया के व्यापारी इस नगर में सामान बेंचने तथा खरीदने के लिये आते हैं। शराब, रेशम, ऊन, कपास, घोड़ों, पशुओं और अस्त्र-शस्त्र का यहां व्यापार होता है। तब्रेज़, इस्फहान आदि के रोगी लोग टिफलिस नगर के धातु के सोते में स्नान करने और अपने को स्वस्थ बनाने के लिये आते हैं। यहां सुन्दर बाज़ार तथा करवां-सराएँ हैं।

उच्च श्रेणी के लोग मूल्यवान, सुन्दर और चमकीले वस्त्र पहिनते हैं। मध्यम श्रेणी के लोगों के कपड़े कम मूल्य वाले

और किसानों के कपड़े बहुत खराब होते हैं। बहुधा गरीब लोग नंगे रहते हैं और केवल फेल्ट का एक वस्त्र लपेटे रहते हैं। जार्जिया के निवासियों का साधारण भोजन सुअर का मांस और बाजरा है।

जार्जिया के निवासी अपना जीवन शिकार खेलने, युद्ध लड़ने तथा निजी झगड़ों के करने में व्यतीत करते हैं। ४ वर्ष की आयु से ही जार्जियन बालक को घोड़सवार बनना तथा अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करना सिखाया जाता है। प्रत्येक साधारण व्यक्ति धनुष-बाण तथा भाला लिये दिखाई पड़ता है। जार्जियन लोग अधिकतर सियार, लोमड़ी, सारस और बड़े पक्षियों का शिकार करते हैं। शिकार करने में वह अपने कुत्तों को भी साथ रखते हैं। गरीब किसानों का मुख्य भोजन बाजरे का गोम (दरिया या लप्सी) है। वह कई प्रकार के मांस खाते हैं। जब कभी कोई बड़ा भोज होता है तो प्रत्येक व्यक्ति नशे में मस्त हो जाता है यदि कोई नशे में मस्त नहीं रहता तो लोग उसे बड़ा गरीब समझते हैं। इस अवसर पर नशे में होना एक आदरणीय बात है।

भाषा

काकेशिया तथा इण्डो-जर्मन, सेमेटिक या तुर्की-मंगोलियन भाषाओं से भिन्न है। काकेशियाई भाषा तीन प्रधान भागों में विभाजित है। १—पूर्वी काकेशियाई २—पश्चिमी काकेशियाई ३—दक्षिणी काकेशियाई भाषा। पूर्वी काकेशियाई भाषा के आठ अंग हैं। पहली चेचेन भाषा जिसका मुख्यरूप से दागिस्तान

और तेरेक में होता है। दूसरी अवारो—आंटी भाषा जिसमें पश्चिमी दाग़िस्तान की १२ भाषाएँ शामिल हैं जिनमें मुख्य अवार भाषा है। ३—दरग़ी भाषा जो पूर्वी दाग़िस्तान में बोली जाती है। ४—सामूर भाषा जिसमें कूरी भाषा प्रधान है। ५—लाक या कामी-कुमूक भाषा जो मध्य दाग़िस्तान में प्रयोग की जाती है। ६—अर्टची भाषा जो दाग़िस्तान के अर्टची गांव में बोली जाती है। ७—हिनालूग़ भाषा हिनालूग़ नामक गांव में बोली जाती है। यह गांव शाह दाग़ पर्वत के समीप है। आठवीं ऊदी भाषा है जो ऊदी नामक दो गांवों में बोली जाती है। यह दोनों गांव नुक़ा नगर के समीप स्थित हैं।

पश्चिमी काकेशियाई भाषा के तीन भाग हैं। अभाज भाषा सु.क़ूमकेल प्रदेश में बोली जाती है। उबीख भाषा पहले साटची प्रदेश में मुख्यकर प्रचलित थी अब यह भाषा एशियाई कोचक में बोली जाती है। ऊदीघे भाषा के दो अंग हैं। कबारदी भाषा नल्टचिक के प्रधान नगर कबरदा में बोली जाती है। कियाक़ भाषा या चेर्केस भाषा कालासागर के कूबान तथा काकेशियाई तट पर बोली जाती हैं। दक्षिणी काकेशिया में जार्जियन, मिंग-रेलियन, लाज़ और स्वानेसियन भाषाओं का प्रयोग होता है अब तक काकेशिया प्रदेश की भाषा और निवासियों के सम्बन्ध में जो कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ है उससे यही पता चलता है कि उत्तरी काकेशिया दक्षिणी काकेशिया से भिन्न है। उत्तरी काकेशिया पूर्वी और पश्चिमी दो प्रधान भागों में विभाजित है।

टसी गाँव

यह गांव उत्तरी ओस्सेटीनिया में पहाड़ के ऊपर स्थित है।

उत्तरी ओस्सेटेनिया की सबसे ऊँची चोटी अदे-क़ोक़ है। यह चोटी लगभग १५ हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इस चोटी के सम्बन्ध में बहुत सी कहानियां प्रसिद्ध हैं। यहीं पर एक स्थान बुरोन नाम से प्रसिद्ध है। पहले यह स्थान सेंट निकोलस के नाम से प्रसिद्ध था। बुरोन स्थान पर पहाड़ी तंग मार्ग दो भागों में बंट जाता है और सड़क दाहिनी ओर एकाएक मुड़ गई है। मोड़ से ही टसी पहाड़ी तंग मार्ग से आरम्भ होती है। यह तंग रास्ता पहाड़ से भी तलवार की म्यान की भांति सकरा भीतर की ओर चला गया है। सड़क सांप की भांति मोड़ खाती हुई हरे ढालू बनों और काले पर्वतीय करारों में समाप्त हो जाती है और फिर पहाड़ के ऊपरी भाग में जाकर दिखलाई पड़ती है।

टसी मार्ग होकर टसी गांव पहुँचना होता है। यह गांव लगभग ७ हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। गांव के चारों ओर बन और बन के चारों ओर बड़े बड़े हिमागार लटक रहे हैं। टसी स्थान समस्त रूस और उत्तरी काकेशिया में अपनी सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। टसी गांव के चारों ओर बरफ के तूफान आया करते हैं और बरफ के बड़े बड़े पहाड़ फिसला करते हैं।

यहां हम जितनी ऊँचाई पर बढ़ते जायँ हमें उतनी अधिक शुद्ध तथा शीतल हवा मिलती जावेगी। यहां का दृश्य देखने से पता चलता है कि गोया हरे गलीचे के ऊपर सफेद चद्दर बिछा दी गई हो। हरे बन हरे गलीचे और सफेद हिमानी चद्दर का काम करती हैं। बरफ के पर्वतों को हिमागार या हिमानी कहते

हैं। ऊपर की हवा का बास होते ही मनुष्य को ताज़ा दूध पीने से ताज़गी मालूम होने लग जाती है। यहां पहाड़ी ढाल पर सुन्दर हरी घास के मैदान हैं और घास के मैदानों पर भिन्न भिन्न प्रकार के सुन्दर फूल खिले हैं।

इसी पहाड़ी तंग मार्ग में ६ हज़ार फुट की ऊँचाई तक बैल-गाड़ियां चला करती हैं। छोटी मोटर गाड़ियां भी सड़क मार्ग से सैर करने वालों को ऊपर ले जाती है। लोग घोड़ों पर भी पहाड़ के ऊपर पहाड़ी मार्ग से जाते हैं।

मार्ग में टसी नदी पड़ती है। टसी गांव पहुँचने के लिये इस नदी को कई बार पार करना पड़ता है यहां पहाड़ी कंदराओं हिमागरों और बनों के मध्य यात्रियों के लिये चौकियां तथा सैनेटोरियम घर बने हैं। इन स्थानों पर जाकर लोग अपना स्वास्थ सुधारते हैं। यहां सदैव बरफ जमी रहती है यह स्थान पहाड़ों की यात्रा करने वालों के लिये एक प्रसिद्ध अड्डा है। सैनेटो-रियम में रेडियो ड्रामा और क्लब घर अलग अलग बने हैं। लोगों के खेलने कूदने के लिये फुटबाल, टेनिस आदि के मैदान बने हैं। इसके समीप ही टसी-डान नदी बहती है। इस नदी के मार्ग में बड़े बड़े पत्थर के रोड़े तथा शिलाएँ हैं। पथरीले मार्ग में नदी की आवाज बड़ी तेज़ और ऊँची होती है। पानी इतनी जोर से आवाज़ पैदा करता है कि यदि मनुष्य नदी के तट पर खड़ा होकर अपनी पूरी शक्ति के साथ चिल्लाये तो भी उसकी आवाज़ पानी की आवाज़ के सामने छिप जावेगी।

टसी एक छोटा सा गांव है। लोगों के घर झोपड़ों के बने

है। गांव के ऊपर दो प्राचीन दुर्ग बने हैं इन दुर्गों से उनकी प्राचीनता का पता चलता है। यह दुर्ग नगर की रक्षा के हेतु बनाये गये थे। गांव के ऊपरी हिमागार से एक नदी निकलकर नीचे ढाल की ओर आती है। गांव के घरों की खिड़कियों से ढ़ालों, बनों और हिमागरों का सुन्दर दृष्य दिखाई पड़ता है।

अल्पाइन बन बहुत लम्बा है और चारों ओर पर्वतों से घिरा है। पहाड़ों के मध्य बनों में जुक्टूर नामक पशु पाया जाता है। यह पशु बकरी की भांति होता है। इसे पहाड़ी बकरी भी कहते हैं। पर्वतों पर शिकारी परिवार निवास करते हैं। इन लोगों का पेशा ही शिकार करना है। यह लोग पहाड़ों पर प्रत्येक दुर्गम स्थान में शिकार कर सकते हैं। इनसे शिकार बच कर नहीं जा सकता है। यह लोग चीता, तेंदुआ, हिरण पहाड़ी डाढ़ी वाला बकरा, जुक्टूर, नीलगाय आदि का शिकार करते हैं। परन्तु जुक्टूर के शिकार में इन्हें सबसे अधिक आनन्द प्राप्त होता है। इसका शिकार करना भी कठिन है। यह पशु दुर्गम पहाड़ी बनैले ढालों पर रहता है और पहाड़ी करारों पर शीघ्रतापूर्वक दौड़ सकता है। यह शिकारी बर्फीले पर्वतों पर जाकर शिकार करते हैं।

ज़ार राजाओं के समय में ओस्सेटेनियन प्रांत के और दूसरे गांवों की भांति टसी पर भी उच्च श्रेणी के लोगों का अधिकार था। उन उच्च श्रेणी के लोगों को डुगरोव कहते थे। वह यहां निवास नहीं करते थे वरन् अपनी भूमि गरीब लोगों को पट्टे पर उठा दिया करते थे और ठीक समय पर उनसे लगान लेने की आशा किया करते थे।

काकेशिया-दर्शन

जब अप्रैल १९१८ ई० में क्रांति हुई और उच्च वर्ग की शक्ति क्षीण होगई तो गरीब लोगों ने टसी से डुडारोव लोगों को निकाल बाहर किया और भूमि को आपस में बांट लिया। आज जब कि सोवियट सरकार ने प्रत्येक भांति की सुविधाएँ प्राप्त कर दी हैं और खेती के लिये भरसक कोशिश की है तो भी इस प्रदेश में धरती की कमी है और यहां के निवासी प्रकृति से युद्ध करते हुये अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

टसी की स्त्रियां अपने गांवों से नीचे समतल मैदान में आती हैं और वहां से मिट्टी लेजाकर पहाड़ी स्थान पर खेती के योग्य भूमि तैयार करती हैं।

यदि हम इस पहाड़ी स्थानों पर जांय तो हम देखेंगे कि लोग किस प्रकार पहाड़ी स्थानों पर खेती करने या पौधों को उगाने के लिये धरती तैयार करते हैं। इन पहाड़ी लोगों के लिये सोवियट सरकार ने प्रत्येक सुविधा कर दी है कि यदि वे चाहें तो पहाड़ी स्थानों को छोड़ कर मोज़दोक के पास वाले प्रदेश में टेरेक में जाकर बस सकते हैं और वहां अपने परिश्रम से अच्छी उपज कर सकते हैं।

इस प्रकार के लोगों को सोवियट सरकार पांच वर्ष तक बिना लगान के भूमि देती है, रहने के लिये मुफ्त घर दिये जाते हैं। उन्हें नौकरी भी दी जाती है और खेती के लिये प्रत्येक भांति के औज़ार तथा बीज आदि मुफ्त दिये जाते हैं। धीरे धीरे पहाड़ी लोग पहाड़ी प्रदेश से उतर कर मोज़दोक प्रदेश में बसते जा रहे हैं।

इस समय टसी गांव में होटल, अस्पताल आदि बना दिये गये हैं। वहां पर बीमार लोगों का इलाज किया जाता है।

टसी से कुछ दूर पर सडोन्स्की की खानें तथा मेजर्र की कारखाना है। इस कारखाने का प्रभाव पहाड़ी जातियों पर बहुत अच्छा पड़ा है। टसी आदि गांवों में दो हज़ार से अधिक मज़दूर इस कारखाने में जाकर काम करने लगे हैं और सभ्य हो गये हैं।

अब टसी का प्रत्येक बालक शिक्षा ग्रहण करता है और वह रूस तथा अपने प्रदेश की उन्नति के लिये प्रत्येक भांति के कार्य करता है। अब वहां जंगली नहीं वरन् सभ्य लोग निवास करते हैं।

टसी के एक किसान की कहानी

टसी गांव में धरती की कमी है। वहां भूमि नहीं है और न शायद कभी होगी। वहां चारों ओर पहाड़, पत्थर, शिला और बड़े बड़े रोड़े ही दिखाई देते हैं मिट्टी का कहीं नाम भी नहीं है। खेती के लिये लोग नीचे समतल घास के मैदानों से मिट्टी ले जाते हैं और मिट्टी तथा खाद से पौधा उगने योग्य भूमि के छोटे छोटे टुकड़े तैयार करते हैं जिसमें वह अपनी खेती करते हैं।

धरती की कमी के संबंध में ही एक किसान की एक विचित्र कहानी है। एक बार एक किसान अपने गधों और हल को लेकर

खेती करने के लिये ढाल के नीचे उतरा। यह अपनी भूमि को मक्का के लिये तयार करने जा रहा था।

जब वह पहाड़ी जटिल मार्ग होकर नीचे उतरा और अपने गधों को हल में जोत कर भूमि जोतने के लिए तैयार हुआ तो उसने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि उसकी भूमि का टुकड़ा लुप्त हो गया। उसने चारों ओर देखा परन्तु पहाड़, बरफ और बनके सिवा कुछ भी न था। उसकी धरती ग़ायब थी। उसने अपनी आंखें मलीं और फिर देखा परन्तु उसे फिर भी भूमि नहीं दिखाई पड़ी। उसे प्रतीत हुआ कि शायद पहाड़ी जिन उसे धोका दे रहे हैं। उसने प्रार्थना भी की परन्तु इससे कोई लाभ न हुआ।

अंत में निराश होकर उसने अपने गधों को जुये से अलग किया और हल उठाकर चला। जैसे ही गधे स्थान से हटे किसान ने देखा कि उसकी भूमि फिर आगई। सचमुच उसकी भूमि गधों के पेट के नीचे छिपी थी।

काकेशिया के काला सागरीय तट की उपज

काकेशिया के काला सागर तट पर जो पहाड़ी ढाल है वह समुद्र की ओर ढालू है और पीछे की ओर ऊँचे हो गये हैं। यह प्रदेश बड़ा उपजाऊ है। पहाड़ियों के किनारों पर बहुमूल्य लकड़ी के बन हैं। इन बनों में शाह बलूत, शफतालू, महोगनी आदि के वृक्ष पाए जाते हैं। महोगनी को टिस कहते हैं यहां काकेशिया की "स्वर्णलकड़ी" बाक्स-लकड़ी भी पाई जाती है।

देश दर्शन

बाक्स लकड़ी हड्डी की भांति सफेद और कड़ी होती है। यह लकड़ी हाथी दांत के स्थान पर प्रयोग की जाती है। काला सागर तट पर यहाँ भांति भांति के फूलों तथा फलों वाले वृक्ष और पौधों के बन हैं जिनके कारण यहां के स्थानीय कहानियों में कहा जाता है कि यहीं साची और गम्री के बीच में आदम बाटिका थी। आदम बाटिका के लिये प्रसिद्ध है कि वह मसोपोयामिया की घाटी में स्थिति थी। आदम बाटिका में ही मुसलमानों के धर्मानुसार मानव जाति के माता-पिता आदम और हव्वा उतारे गये थे।

रूसी कालासागरीय तट सोवियट रूस के फलों की बाटिका है। यहां फल बहुत होता है। इस भाग में कई जातियों के मनुष्य निवास करते हैं वे लोग अब भी अपनी प्राचीन बातों के मानने वाले हैं। स्टेपर घास के मैदान में जो लोग आकर बसते हैं वह गेहूँ की खेती करते हैं। पहाड़ी ढालों पर आर्मेनी लोग नाज की खेती करते हैं। यूनानी लोग तम्बाकू की खेती करते हैं। पहाड़ों पर निवास करने वाले गल्ले वानी का काम करते हैं और दूध, दही, मक्खन और पनीर तैयार करते हैं। नदियों के तैयार रूसी, कोसक और यूक्रेन निवासी गेहूँ की खेती करते हैं। इस प्रदेश में जर्मन और एस्टोनी लोगों की बस्तियों में फलों की बाटिकाएँ हैं। यही बाटिकाएँ सब से अधिक प्रसिद्ध हैं। इस प्रदेश में तीस प्रकार से अधिक की सेब, कई भांति की नाशपाती, बैर, आलूबुखारा, शफ़तालू, इंजीर, बिही आदि फल होते हैं। यहां चाय के भी बगीचे हैं। आर्मेनी लोग पहले इस प्रदेश में केवल खेतों में नाज की उपज करते थे। अब सोवियट

सरकार स्थापित हुई तो पहाड़ी ढालों पर सीढ़ीदार स्थान बनाए गये और वहीं फली की वाटिकाएँ लगाई गईं। इन सीढ़ीदार ढालों पर आर्मेनी लोग भांति भांति के फल पैदा करते हैं। जो न केवल रूस में वरन् संसार के दूसरे देशों में भेजे जाते हैं।

उत्तरी काकेशिया

इस प्रदेश के उत्तर-पूर्व स्टैलिनग्राड, उत्तर पश्चिम ओरोनेज़, पश्चिम की ओर यूक्रेन, अज़ोव और काला सागर दक्षिण की ओर अब्कज़िया और जार्जिया तथा पूर्व की ओर दागिस्तान और काल्मुक स्थित हैं। इस प्रदेश की जन-संख्या लगभग ८४ लाख है। शासन की दृष्टि से उत्तरी काकेशिया में अडोगी-चेर्केस, कराचेव, कबरडिनी-बाल्कर्स्क, उत्तरी ओस्सेशिया इंगूश और चेचेन के प्रदेश सम्मिलित हैं।

इस प्रदेश में रूसो, यूक्रेनी, सफेद रूसी, चेक ओसेशियन, आर्मेनी, कबरडेनी, यूनानी, जर्मन, चेर्केस, तातार, जार्जी, तुर्क, पारसी, मोल्डवियन, पोल, यहूदी, एस्टोनियन आदि भिन्न भिन्न वर्गों के होते हुये भी इस प्रान्त के निवासी आर्थिक तथा राज-नैतिक दृष्टि से संगठित हैं।

इस प्रदेश की धरती बड़ी उपजाऊ है और इसके पश्चिमी तथा दक्षिणी-पश्चिमी भाग में काली मिट्टी पाई जाती है। काला सागरीय प्रदेश में २७५ दिन, क्रोस्नोडोर मैकोप और अमीविर में २५० दिन तक बनस्पति उग सकती है। उत्तरी काकेशिया में गेहूँ, जौ, मक्का, राई, बाजरा, ज़ैतून, सूर्यमुखी पुष्प के बीज आदि की उपज होती है। यहां तेल और लकड़ी भी बहुत है।

ढान, काला सागर और कूबान प्रदेश में अंगूर की खेती अच्छी होती है। कूबान और काला सागर प्रान्तों में तम्बाकू की खेती होती है। दक्षिणी-पश्चिमी कूबान और बड़े नगरों के समीप बाज़ार में बिकने वाले फल अधिक पैदा होते हैं।

सूखे घास वाले प्रदेश में पशु पाले जाते हैं। कूबान और कबहदिया में घोड़े पाले जाते हैं। मैकोप क्षेत्र में यूक्रेनी बैलों से खेती का काम लिया जाता है। और वहां यूक्रेनी पशु पाले जाते हैं। नगरों के समीप दूध देने वाले पशु पाले जाते हैं जिनसे मक्खन, पनीर आदि तैयार किया जाता है। काल्मुक के मवेशियों से अच्छा मांस तैयार होता है। मुर्गी, बतख़ और अंडे देने वाली दूसरी चिड़ियां भी पाली जाती है। मक्का की उपज वाले प्रान्तों में सुअर बहुत पाले जाते हैं। पहाड़ी ढालों पर बकरियों के पालने का काम होता है। ग्रोज्नी, टुवाप्से, मैकोप, नोवोरोसिस्क, रोस्टोव, क्रास्नोडोर अर्मावर आदि प्रदेश रोज़गारी हैं और ऊनी-सूती कपड़ा, साबुन तथा दूसरी घरेलू वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। बड़े कारखानों में प्रत्येक भांति की कलें, लड़ाई के सामान आदि तैयार किये जाते हैं।

इस प्रदेश के प्रधान नगर रोस्टोव डानपर (२,३३.४९१) क्रोस्नोडार (१७४,२०१) टगनरोग, अर्मावर, व्लाडी कावकाज़ ग्रोज्नी, नोवरोसिस्क, स्टावरोपोल प्याटीगोर्स्क, शाख़्ती, बटलपाशिंस्क, मिलेरोप साल्स्क और मैकोप है। इन नगरों से ही उत्तरी काकेशिया के कारखाने वाली उन्नति का अंदाज लग जाता है। अब भी यहां के अधिकांश निवासी खेती में ही लगे हैं।

हिमागार

काकेशिया में ९०० से १००० फुट की ऊँचाई वाले पहाड़ी भागों पर हिमरेखा का आरम्भ हो जाता है। काकेशिया में ९०० से अधिक हिमागार अथवा हिमानी हैं। हिमागार या हिमानी बरफ के ठोस पर्वतों को कहते हैं। इनमें कुछ अधिक प्रसिद्ध हिमागार यह हैं। दीखटौ और जंगटौ के मध्य बेजिंगी या उलू हैं। यह हिमागार साढ़े दस मील लम्बा है और ६,५३५ फुट की ऊँचाई तक उतरता है। अदीर-सू बाशी के दक्षिण लेक्सीर नामक हिमागार है। यह साढ़े सात मील लम्बा है। इसका अंतिम किनारा ५६९० फुट की ऊँचाई पर है। कारागोप हिमागार साढ़े नौ मील लम्बा है और ५७९० फुट की ऊँचाई तक आता है। उत्तर की ओर सब से नीचा डटोब्डोराव या देव-डोरक ढाई मील लम्बा है। क़ल्देह या जेरेशो सवाचार मील लम्बा है। यह शकारा से जंगाटौ तक फैला है। टयीबेर साढ़े ६ मील लम्बा है और ६५६५ फुट की ऊँचाई तक पहुँचता है। सोनर या ज़ोनर नामक हिमागार भी लगभग साढ़े ६ मील लम्बा है। अदीश और गेस्टोला के मध्य से अदीश या लर्दक़ात हिमागार का आरम्भ होता है। यह ५ मील लम्बा है और ७,४५० फुट की ऊँचाई तक पहुँचता है। काकेशस प्रदेश में ६५० वर्ग मील में हिमागार फैले हैं। सबसे लम्बा हिमागार मालोव या कास्वेक है जो ३६ मील लम्बा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि काकेशस प्रदेश हिमागारों की खान है।

देशी राज्य

"भूगोल" के सोलहवें वर्ष का विशेषाङ्क

"भूगोल" के आकार के २४४ पृष्ठ, कई नक़शे और लगभग १०० चित्र

देशी राज्य में भारतवर्ष के प्रधान राज्यों का विस्तृत वर्णन है। भारतवर्ष के छोटे बड़े सभी देशी राज्यों का समावेश है। अन्त में लगभग ४४ पृष्ठों में देशी राज्यों की अकारादि क्रमानुसार अनुक्रमणिका है। इस अनुक्रमणिका में सभी राज्यों का संक्षिप्त-परिचय है। सभी बड़े राजाओं के चित्र और प्रधान राज्यों के नक़शे हैं।

देशी राज्य हिन्दी साहित्य में सचमुच अनोखा है। मूल्य केवल २) है।

मैनेजर, भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद